व्याकरण सुधा

GRADE

7

1. भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण (Language, Dialect, Script and Grammar)

❐ अभ्यास

1. (क) भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसमें मानव अपने मन में उठ रहे विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है एवं दूसरों के विचारों को पढ़कर और सुनकर समझता है। भाषा के दो रूप हैं—(i) मौखिक भाषा (ii) लिखित भाषा।

(i) **मौखिक भाषा**—जब हम बोलकर अपने विचार प्रकट करते हैं और सुनकर समझते हैं, तो उसे मौखिक भाषा कहा जाता है। मौखिक भाषा का प्रयोग हम वार्तालाप करने, टेलीफोन, बातचीत, साक्षात्कार करने, पढ़ाने, समझाने, संगीत सुनने और कमेंट्री इत्यादि के लिए करते हैं। मौखिक भाषा में ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

माँ हमारा स्कूल पिकनिक मनाने सोनीपत जा रहा है, मुझे 1000 रुपये चाहिए।

ठीक है, रितिका तुम्हारे पापा को बताकर तुम्हें पैसे दिलवा दूँगी। यह भाषा का मौखिक रूप है जहाँ बेटी और माँ वार्तालाप कर रहे हैं।

(ii) **लिखित भाषा**—जब मनुष्य लिखकर अपने विचार व्यक्त करता है तो उसे लिखित भाषा कहा जाता है। लिखित भाषा में वर्णों का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

माँ मुझे ट्यूशन की फीस देनी है मुझे 10000 रुपये चाहिए।

ये लो अपनी ट्यूशन टीचर को दे देना।

यहाँ रितिका ने अपने मन की बात माँ को लिखकर दी। माँ ने उसे पढ़कर जाना। यह भाषा का लिखित रूप है।

(ख) (i) भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है, जबकि बोली एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है।

(ii) भाषा का अपना लिखित साहित्य एवं व्याकरण होता है जबकि बोली का अपना लिखित साहित्य नहीं होता।

(ग) गद्य साहित्य में हम अपने विचार कहानी, निबंध और नाटक के रूप में प्रकट करते हैं जबकि पद्य साहित्य में हम अपनी बात कविता के रूप में प्रकट करते हैं।

(घ) व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें किसी भाषा को शुद्ध रूप से बोलना एवं लिखना सिखाता है। भाषा के कुछ नियम होते हैं। व्याकरण के अन्तर्गत हम भाषा के उन नियमों को सीखते हैं।

(ङ) जो भाषा बच्चा सबसे पहले अपने घर में अपने परिवार से सीखता है उसे मातृभाषा कहते हैं; जैसे—यदि माँ बांग्ला बोलती है तो बच्चा बांग्ला सीखेगा। बांग्ला ही उसकी मातृभाषा होगी।

2. (क) मौखिक (ख) प्रारम्भिक (ग) बोली (घ) अंग्रेजी (ङ) लिपि

3. (क) (✓) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✗) (ङ) (✓) (च) (✗) (छ) (✓) (ज) (✓)

4. (क) मौखिक (ख) मौखिक (ग) लिखित (घ) लिखित (ङ) मौखिक

5. 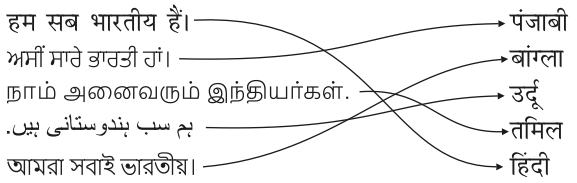

6.

विदेशी भाषाएँ	**भारतीय भाषाएँ**
रूसी	कोंकणी
फ्रेंच	तेलुगू
जर्मन	गुजराती
जापानी	तमिल
पुर्तगाली	राजस्थानी

7.

प्रांत	**प्रांत**
महाराष्ट्र	गुजरात
तमिलनाडु	हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार
पंजाब	बंगाल
हरियाणा	आंध्र प्रदेश
उड़ीसा	केरल

8. छात्र स्वयं करें।
9. कफन, दो बैलों की कथा, पूस की रात, ईदगाह और नमक का दारोगा।
10. रामचरितमानस अवधी में और सूरसागर ब्रज भाषा में लिखे गये।
11. वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण संस्कृत में है।
12. छात्र स्वयं करें।

❑

2. वर्ण-विचार (Phonology)

❑ अभ्यास

1. (क) वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है जिसे खंडित नहीं कर सकते हैं।

(ख) **स्वर**—जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी वर्ण की मदद से किया जाता है, वे **स्वर** कहलाते हैं। इनका उच्चारण करते समय वायु बिना रुकावट के मुख से बाहर निकलती है। हिन्दी में स्वरों की कुल संख्या 11 है।

उदाहरण—अ आ इ ई उ ऊ ऋ
ए ऐ ओ औ (अं अः)

स्वर के भेद

(i) ह्रस्व (ii) दीर्घ (iii) प्लुत

(i) **ह्रस्व स्वर**—जिन स्वरों को बोलने में कम समय लगता है, वे ह्रस्व कहलाते हैं। ये संख्या में चार हैं; जैसे—अ, इ, उ, ऋ।

(ii) **दीर्घ स्वर**—जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से दुगना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। ये संख्या में सात हैं; जैसे—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) **प्लुत स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इसका चिह्न (ऽ) है; जैसे—राऽम।

(ग) **व्यंजन**—जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, वे व्यंजन कहलाते हैं। स्वर रहित व्यंजन को दर्शाने हेतु उसके नीचे तिरछी रेखा (्) हलंत लगाया जाता है। व्यंजनों की कुल संख्या तैंतीस (33) है, लेकिन संयुक्त **व्यंजन** और अन्य को मिलाकर उनतालीस (39) व्यंजन होते हैं।

उदाहरण—स्वर रहित व्यंजन — क् प् म् र् आदि।
स्वर सहित व्यंजन — क प म र आदि।

'ड़' को 'ढ़' विशेष व्यंजन ध्वनियाँ हैं जिनका विकास क्रमशः 'ड्' एवं 'ढ्' से हुआ है। इनका प्रयोग शब्दों के मध्य और अंत में होता है; जबकि 'ड' एवं 'ढ' का प्रयोग शब्द के आरंभ, मध्य और अंत तीनों स्थानों पर होता है।

ड — डिब्बा, डली
ढ — ढकना, ढोलक
ड़ — अकड़, अड़ंगा
ढ़ — पढ़ा, पढ़ाकू

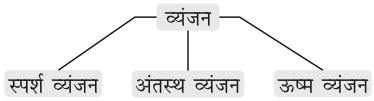

(घ) (i) **स्पर्श व्यंजन**—जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के अलग-अलग अवयवों या भागों को स्पर्श करती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख के जिस भाग को जिह्वा स्पर्श करती है, वही उस व्यंजन का उच्चारण स्थान माना जाता है। हिन्दी में स्पर्श व्यंजन 25 होते हैं—

	व्यंजन					उच्चारण स्थान
कवर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	(कंठ)
चवर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	(तालु)

टवर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	(मूर्धा)
तवर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्	(दंत)
पवर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्	(होंठ)

(ii) **ऊष्म व्यंजन**—इन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु तेज गति से मुँह से रगड़ खाती है और ऊष्मा (गरमी) पैदा करती है अतएव इन्हें ऊष्म व्यंजन कहा जाता है। ऊष्म व्यंजन संख्या में चार हैं—

श्, ष्, स्, ह्

2. (क) किसी की नहीं
   (ख) 44 (33 व्यंजन + 11 स्वर)
3. (क) वर्णों (ख) स्वर (ग) विसर्ग (घ) आगत
   (ङ) अनुनासिक
4. परम्परा — डण्डा
   व्यञ्जन — झण्डा
5. दाँत पसंद हँसना लंगड़ा चंदन
   पाँचवा संन्यासी आँख गेहूँ झंडा
6. अपनत्व — निजत्व
   मक्खन — मक्खी
   अध्यात्म — ऋणात्मक
   प्रज्जवलित — सज्जन
7. करम — क् + अ + र् + अ + म् + अ
   अनुपम — अ + न् + उ + प् + अ + म् + अ
   हथियार — ह् + अ + थ् + इ + य् + आ + र् + अ
   दर्पण — द् + अ + र् + अ + प् + अ + ण् + अ
   पैतृक — प + ऐ् + त् + र् + अ + क् + अ
   लोक — ल् + ओ + क् + अ
8. मौसम — गतिमान
   चंद्रिका — अद्‌भुत
   मति — आदेश
   उपस्थित — शापित
9. स्वर एवं व्यंजनों के मेल से नये शब्दों का निर्माण होता है उसी प्रकार आपस में मेल से एक नये समाज का उदय होता है जो भाईचारा और समता पर आधारित होता है।
10. छात्र स्वयं करें।

❑

3. संधि (Joining)

❒ अभ्यास

1. (क) जब दो शब्द एक-दूसरे के समीप आते हैं तो पहले शब्द के अंतिम वर्ण दूसरे शब्द के पहले वर्ण में मेल होता है। इस मेल से वर्णों में विकार पैदा होता है। वर्णों के मेल से जो परिवर्तन होता है वही **संधि** कहलाता है। **उदाहरण**—

   प्रधान + अध्यापक = प्रधानाध्यापक
   अ + अ = आ
   अंतिम वर्ण (प्रथम वर्ण)
   (यहाँ प्रधान शब्द के 'अ' और अध्यापक शब्द के 'अ' में संधि हुई है।)
   सूर्य + उदय = सूर्योदय
   अ + उ = ओ
   (अंतिम वर्ण) (प्रथम वर्ण)
   (यहाँ सूर्य शब्द के 'अ' और उदय शब्द के 'उ' में संधि हुई है।)

   दर्शनीय है कि शब्दों के निकट आने पर वर्णों के मेल से विकार उत्पन्न हुआ जिससे वर्णों में परिवर्तन आया और नये शब्दों का निर्माण हुआ।
   दो वर्णों के पारस्परिक मेल से उत्पन्न होने वाले विकार को संधि कहते हैं।

   (ख) **संधि-विच्छेद**—संधि-विच्छेद का अर्थ है—अलग होना। संधि द्वारा बने शब्दों को अलग-अलग करके लिखने को संधि-विच्छेद कहते हैं;
   जैसे—भानूदय = भानु + उदय सुरेश = सुर + ईश

2. (क) विकार (ख) अलग होना (ग) तीन (घ) व्यंजन

3. | | |
|---|---|
| परमेश्वर | भानूदय |
| जन्मोत्सव | नाविक |
| सूर्योदय | यमुनोर्मि |
| पित्राज्ञा | नायक |
| पावन | वनौषधि |
| कवीच्छा | वधूत्सव |
| अत्याचार | पर्यावरण |

4. | **स्वर संधि** | **व्यंजन संधि** | **विसर्ग संधि** |
|---|---|---|
| रामावतार | | |
| प्रत्युपकार | | |
| स्वागत | | |
| मतैक्य | | |
| प्रत्येक | | |

देव्यैश्वर्य
सदैव
लोकैषण
तथैव
सीमांत
वधूत्सव
दीक्षांत

5. **संधि-विच्छेद** — **भेद**

विद्यार्थी = विद्या + अर्थी	दीर्घ संधि
पत्नीच्छा = पत्नी + इच्छा	दीर्घ संधि
गणेश = गण + ईश	गुण संधि
राजेंद्र = राजा + इंद्र	गुण संधि
गायक = गै + एक	अयादि संधि
सज्जन = सत् + जन	व्यंजन संधि

6. संधि से जीवन में मेलजोल भाईचारा उत्थान और एकता के भाव पनपते हैं वही विच्छेद से कलह, ईर्ष्या, संघर्ष और अवनति के भाव पनपते हैं।
7. यदि हम जीवन में गलत होते देखते हैं तो हम लोगों से संधि नहीं विच्छेद करेंगे क्योंकि गलत का साथ देना हमें भी पाप का दोषी बना देगा।
8. छात्र स्वयं करेंगे।

❑

4. उपसर्ग (Prefix)

❑ अभ्यास

1. (क) जो शब्दांश किसी मूल शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं वे **उपसर्ग** कहलाते हैं; जैसे—

उपसर्ग		**मूल शब्द**		**निर्मित शब्द**
परि	+	जन	=	परिजन
प्र	+	खर	=	प्रखर

हिन्दी में उपसर्ग मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं—
(i) संस्कृत के उपसर्ग
(ii) हिन्दी के उपसर्ग
(iii) अरबी-फारसी भाषाओं के उपसर्ग

(ख) **संस्कृत के उपसर्ग—**

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग जोड़कर बने शब्द
अति	अधिक	अत्यंत, अत्यधिक, अतिदेश, अतिरिक्त, अत्युत्तम, अतिशय, अत्याचार
अधि	ऊँचाई, श्रेष्ठ	अधिपति, अधिकृत, अधिकरण, अधिगम, अधिनायक, अधिराज, अधिकार, अध्यक्ष
अनु	पीछे, समान, क्रमसूचक	अनुसार, अनुचर, अनुशासन, अनुशीलन, अनुरूप, अनुयायी, अनुकरण, अनुज
अभि	ओर, पास, अधिक	अभिमान, अभिलाषा, अभिनेता, अभिमुख, अभिशाप
अप	हीन, बुरा, अभाव	अपमान, अपराध, अपव्यय, अपशब्द, अपशकुन, अपवाद, अपकार, अपकर्ष
अव	अनादर, नीचे, हीनता	अवगत, अवलोकन, आरोहण, अवज्ञा, अवगुण, अवसान, अवनति, अवतार
आ	ओर, तक	आगमन, आजन्म, आमरण, आरोहण, आरोह, आमुख, आक्रोश
उत्	श्रेष्ठ, ऊपर	उत्पत्ति, उद्‌गम, उत्थान, उद्‌देश्य, उद्‌धार, उद्‌भव, उत्सर्ग
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्गुण, दुर्दांत, दुर्बल, दुर्जन, दुर्दशा, दुराचार, दुर्गम, दुर्लभ
निर्	बिना, नहीं रहित	निर्बल, निर्मल, नियुक्त, निवारण, निषेध, निर्भय, निर्दोष, निर्धन, निर्जन
प्र	आगे, गति	प्रकर्ष, प्रखर, प्रख्यात, प्रपंच, प्रयत्न, प्रबल, प्रस्थान, प्रयोग, प्रगति, प्रफुल्ल, प्रताप
वि	विशेषता, भिन्नता	विदेश, विशेष, विनम्र, विमुख, विस्मरण, विनाश, विपत्ति, वियोग
सु	अच्छा, सरल	सुकर्म, सुपुत्र, सुगम, सुकन्या, सुशील, सुरुचि, सुपात्र, सुशांत
प्रति	हर एक, बराबरी	प्रतिक्षण, प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिपल, प्रतिदान, प्रतिफल, प्रतिशोध, प्रत्येक, प्रतिध्वनि
परा	उलटा	पराजय, पराधीन, पराक्रम, परामर्श, पराकाष्ठा, पराभव

(ग) **हिन्दी के उपसर्ग—**

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग जोड़कर बने शब्द
अ	कभी, अभाव	अथाह, अगम, अजर, अमर, अटल, अज्ञान, अशांत, अविकसित
अन	निषेध, विरोध	अनपढ़, अनदेखा, अनमोल, अनसुना, अनबन, अनजाना, अनहोनी
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधसेरा, अधकचरा, अधखिला
उन	एक कम	उन्नीस, उनतीस, उनतालीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उन्यासी
कु	बुरा, नीचता	कुविचार, कुपुत्र, कुकर्म, कुपात्र, कुचाल, कुबुद्धि, कुसंग
सु	अच्छा	सुपुत्र, सुघड़, सुअवसर, सुडौल, सुकन्या, सुजान, सुविचार, सुदृढ़
स	साथ	सपरिवार, सस्नेह, सजग, सविनय
दुर्	हीन, बुरा	दुर्गुण, दुर्बल, दुर्भाग्य, दुरात्मा
नि	अभाव	निडर, निठल्ला, निहत्था, निर्लज्ज, निस्संकोच, निकम्मा
भर	पूरा, ठीक	भरपेट, भरसक, भरमार, भरपाना, भरपूर

(घ) **अरबी-फारसी के उपसर्ग—**

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग जोड़कर बने शब्द
अल	निश्चित	अलबत्ता, अलगरज, अलमदार
कम	थोड़ा	कमजोर, कमसिन, कमउम्र, कमअक्ल, कमबख्त
गैर	बिना अभाव	गैरजरूरी, गैरइंसाफी, गैरकानूनी, गैरहाजिर, गैरमुल्क, गैरसरकारी
ना	कमी/नहीं	नामुमकिन, नामुराद, नासमझ, नाचीज, नादान, नाबालिग, नाजायज
ब/बा	साथ	बदौलत, बाअदब, बनाम, बाकायदा, बाइज्जत, बानसीब
खुश	श्रेष्ठ, अच्छा	खुशमिजाज, खुशकिस्मत, खुशबू, खुशदिल
दर	में	दरअसल, दरहकीकत, दरमियान, दरवेश
ला	रहित	लावारिस, लाइलाज, लाजवाब, लाचार, लापरवाह

बद	बुरा	बदनाम, बदकिस्मत, बदहवास, बदबू, बदहजमी, बदमिजाज, बदसूरत, बदतमीज, बदनीयत, बदकार
बे	बिना	बेहिसाब, बेकाबू, बेईमान, बेइज्जत, बेकार, बेवकूफ
हम	समान, मान	हमदर्द, हमशक्ल, हमराज, हमउम्र, हमपेशा, हमनाम
हर	प्रत्येक	हरदिन, हररोज, हरकाम, हरएक, हरचीज, हरसाल
ऐन	ठीक, पूरा	ऐनवक्त, ऐनमौका

2.

उपसर्ग	**मूलशब्द**
अनु	सार
आ	गमन
अव	गुण
उत्	थान
प्र	बल
वि	स्मरण
परा	जय
दुर्	बल
भर	पेट
बे	हिसाब

3.

उन्नीस	उनतीस	निडर	निठल्ला
कुविचार	कुपुत्र	गैरकानूनी	गैरइंसाफी
बदनाम	बदकिस्मत	हमदर्द	हमराज
खुशनसीब	खुशकिस्मत	आक्रोश	आजन्म
विशेष	विमुख	अपकार	अपकर्ष
अभिनेता	अभिलाषा	आमरण	आरोहण
अतिशय	अतिरिक्त	अवगत	अवतार

4.

वि	ना
प्रति	ला
अ	बद
अध	स
अन	उन

5. छात्र स्वयं करें।

❑

5. प्रत्यय (Suffix)

❐ अभ्यास

1. (क) **प्रत्यय** वे अक्षर या अक्षर समूह हैं जो अन्य शब्दों के साथ जुड़कर उनका अर्थ बदल देते हैं। हिन्दी में संस्कृत प्रत्ययों की प्रधानता है। हिन्दी में कुछ अपने भी प्रत्यय हैं। अरबी-फारसी के भी कुछ प्रत्यय प्रयोग में लाये जाते हैं।

तैर + आक = तैराक लकड़ + हारा = लकड़हारा

आपने देखा कि मूल शब्द तैर तथा लकड़ में क्रमशः आक एवं हारा शब्दांश लगाकर नये शब्द बनाये गये हैं। आक और हारा ऐसे शब्दांश हैं जिनका अपना कोई अर्थ नहीं है लेकिन जिस शब्द के साथ जुड़ जाते हैं उनके अर्थ में परिवर्तन ले आते हैं।

जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर नये शब्द का निर्माण करते हैं और उसके अर्थ में बदलाव ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय के भेद—प्रत्यय के दो भेद होते हैं—1. कृत प्रत्यय 2. तद्धित प्रत्यय

(ख) **संस्कृत के तद्धित प्रत्यय**

प्रत्यय	**प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द**
इत	अंकित, शोभित, मोहित, पल्लवित
ईय	राष्ट्रीय, भारतीय, शासकीय
तम	श्रेष्ठतम, उच्चतम, न्यूनतम, गहनतम, अंतरतम
नीय	आदरणीय, गोपनीय, सराहनीय, सहनीय
आरी	भिखारी, अधिकारी, दुधारी, सवारी
त्व	महत्व, पुरुषत्व, लघुत्व, कवित्व, दायित्व, प्रभुत्व
ता	महानता, सुंदरता, एकता, खाता, पीता, रायता, मानवता
वान	भाग्यवान, मूल्यवान, दयावान, पहलवान, कोचवान
वती	भाग्यवती, सौभाग्यवती, पुत्रवती

संस्कृत के कृत प्रत्यय

प्रत्यय	**प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द**
अनीय	पठनीय, गोपनीय, विश्वसनीय, सहनीय, महनीय
ता	दाता, विक्रेता, श्रोता, रायता, वक्ता
उक	भिक्षुक, भावुक
व्य	कर्तव्य, श्रव्य, नव्य, भव्य
अना	भावना, पढ़ना, प्रार्थना, कामना, रहना
आनी	जेठानी, पंडितानी, देवरानी, मेहरबानी, गुरुआनी
आर	सुनार, लुहार, कुम्हार, गँवार

आस	मिठास, खटास, भड़ास
इक	नैतिक, मौलिक, भौगोलिक, दैनिक, मौखिक
ईन	नमकीन, रंगीन, शौकीन
ईला	चमकीला, गर्वीला, सजीला, नुकीला, बर्फीला
एरा	सपेरा, चचेरा, ममेरा, घनेरा, मौसेरा

(ग) **हिन्दी के कृत प्रत्यय**

प्रत्यय	**प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द**
आई	पढ़ाई, लिखाई, बुनाई, चतुराई, चढ़ाई, पंडिताई
आऊ	कमाऊ, टिकाऊ, बिकाऊ, उड़ाऊ
अक्कड़	भुलक्कड़, घुमक्कड़, पियक्कड़
आन	मिलान, उड़ान, उठान, लगान
आव	बहाव, बचाव, कटाव, घिराव, पथराव, भराव
आवट	दिखावट, बनावट, मिलावट, सजावट, लिखावट
आवा	दिखावा, भुलावा, पहनावा, बुलावा

(घ) **अरबी-फारसी के कुछ प्रचलित प्रत्यय**

प्रत्यय	**प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्द**
आना	मेहनताना, दस्ताना, घटाना, बढ़ाना, बहलाना
ई	दोस्ती, दलाली
कार	काश्तकार, दस्तकार, पेशकार
खाना	कारखाना
गर	सौदागर, कारीगर, बाजीगर
बंद	नजरबंद, कमरबंद, बिस्तरबंद
बाजी	चालबाजी, पतंगबाजी, आतिशबाजी

2.

मूल शब्द	**प्रत्यय**
श्रेष्ठ	तम
महान	ता
लिख	आवट
ताँगे	वाला
चमक	ईला
कृपा	आलू
भूगोल	इक
सौभाग्य	वती
घिर	आव
पत्थर	आव
भाव	अना

3. एकता — रायता
   कर्तव्य — भव्य
   गर्वीला — सजीला
   चचेरा — ममेरा
   काश्तकार — दस्तकार
   रखवाला — चायवाला
   लिखावट — बनावट
   दयालु — श्रद्धालु
   नैतिक — मौखिक
   पठनीय — महनीय
   ललाईन — ठकुराइन
4. वाई आई इक गर आर आवट
5. छात्र स्वयं करें।

❑

6. समास (Compound)

❑ अभ्यास

1. (क) **समास** ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दो अथवा दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एवं छोटा करके नया शब्द बनाया जाता है।
   शब्दों को संक्षिप्त करके नये शब्द बनाने की प्रक्रिया **समास** कहलाती है।
   राजा और रानी = राजा-रानी तीन रंगों का समाहार = तिरंगा
   ऊपर दिये दोनों शब्द समास द्वारा बनाये गये हैं।

   (ख) **अव्ययीभाव**—जिस समास में पहला पद प्रधान होता है और समूचा शब्द क्रिया विशेषण अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। **उदाहरण**—
   अनजाने – बिना जाने भरपेट – पेट भरकर
   यथासमय – समय के अनुसार निस्संदेह – संदेह के बिना/संदेह रहित
   प्रतिदिन – हर दिन यथासंभव – जैसा सम्भव हो

   (ग) **द्विगु समास**—द्विगु समास में पहला संख्यावाची होता है। इसमें विग्रह करते समय समाहार या सारे शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे—
   नवरत्न – नौ रत्नों का समाहार नवग्रह – नौ ग्रहों का समूह
   नवरात्रि – नौ रात्रियों का समाहार दोपहर – दूसरा पहर
   दोराहा – दो राहों का समाहार तिरंगा – तीन रंगों का समाहार
   त्रिवेणी – तीन वेणियों (नदियों) का समाहार चौराहा – चार राहों का समाहार

(घ) **तत्पुरुष समास**—तत्पुरुष समास में उत्तरपद प्रधान होता है। प्राय: पहला पद विशेषण और दूसरा पद पद विशेष्य है। इसमें पूर्वपद तथा उत्तरपद के बीच की सभी विभक्तियों एवं कारक चिह्नों का लोप हो जाता है; जैसे—

आपबीती = आप पर बीती गुणभरा = गुण से भरा।

(ङ) **कर्मधारय समास**—कर्मधारय समास में पहले पद तथा दूसरे पद में विशेषण-विशेष्य अथवा उपमान-उपमेय का संबंध होता है अर्थात् इसमें पहला पद विशेषण एवं दूसरा पद विशेष्य होता है; जैसे—

नीलगाय - नीली है गाय जो।

इसमें नीली विशेषण है तथा गाय विशेष्य है। इसलिए पूर्वपद एवं उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य का संबंध है।

इसमें एक पद उपमान (जिससे उपमा दी जाए) तथा दूसरा पद उपमेय (जिसकी उपमा दी जाए) होता है।

उदाहरण—करकमल - कमल के समान कर। यहाँ कर की उपमा कमल के साथ दी जा रही है। अतएव पूर्वपद तथा उत्तरपद में उपमान-उपमेय का संबंध है। 'कर' उपमेय है और 'कमल' उपमान।

नीचे कर्मधारय समास के कुछ उदाहरण दिये गये हैं इन्हें ध्यान से पढ़िए—

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
नीलगगन	नीला है गगन जो	पीतांबर	पीला है अंबर जो
महाराजा	महान है राजा जो	महात्मा	महान है आत्मा जो

(च) **द्वंद्व समास**—द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। इसमें पूर्वपद एवं उत्तरपद को जोड़ने वाले योजक शब्द; जैसे—और, तथा, या, व, एवं अथवा आदि शब्दों का लोप हो जाता है; जैसे—

भाई-बहन - भाई और बहन माता-पिता - माता और पिता

हानि-लाभ - हानि एवं लाभ यश-अपयश - यश और अपयश

घर-बाहर - घर या बाहर जीवन-मृत्यु - जीवन और मृत्यु

सुख-दुख - सुख या दुख दो-चार - दो या/अथवा चार

2.

समास विग्रह	**समास भेद**
कान में फुसफुसाहट	तत्पुरुष समास
गुरु से भाई	तत्पुरुष समास
चार भुजाओं का समूह	द्विगु समास
पीला है अंबर जो	कर्मधारय समास
हर दिन	अव्ययीभाव समास
रसोई के लिए घर	तत्पुरुष समास
सेना का नायक	तत्पुरुष समास

3. लम्बोदर
अश्रुगैस
बेलगाम
दोराहा
करमुक्त
राजभाषा
हानि-लाभ
मनगढ़ंत
लोकप्रिय
धनहीन
प्रयोगशाला
धर्मविमुख
लोकप्रिय
राजकुमार

4.

तत्पुरुष	**अव्ययीभाव**	**द्विगु**
सत्याग्रह	आजीवन	नवरात्रि
जन्मांध	बेशक	पंचतंत्र
ध्यानमग्न	लाजवाब	चारपाई
घुड़सवार	प्रतिदिन	त्रिभुवन
रसोईघर	निडर	
मनगढ़ंत	गाँव-गाँव	
देशभक्ति		

5. छात्र स्वयं करें।

❑

7. शब्द-विचार (Morphology)

❑ अभ्यास

1. (क) वर्णों के व्यवस्थित एवं सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

(ख) उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के पाँच भेद हैं। (i) तत्सम शब्द, (ii) तद्भव शब्द, (iii) देशज/देशी शब्द, (iv) विदेशी शब्द, (v) संकर शब्द।

(ग) वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिन्दी में आये हैं एवं ज्यों के त्यों प्रयोग में लाये जाते हैं उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे—अन्न, स्तुति, आश्रय, अमृत, अक्षर आदि।

तद्भव शब्द वे शब्द हैं जो मूलरूप से संस्कृत के शब्दों का परिवर्तित रूप है; जैसे कपूर, कछुआ, किसान, कुम्हार, गोबर आदि।

(घ) दो या दो से अधिक शब्दों या शब्दांशों से बने शब्द **यौगिक शब्द** कहलाते हैं। **उदाहरण**—देवालय, छात्रावास, देवदूत आदि। देवालय शब्द 'देव' एवं आलय और छात्रावास शब्द छात्र एवं 'आवास' शब्दों के मेल से बने हैं। अत: ये यौगिक शब्द हैं।

ऐसे यौगिक शब्द जो सामान्य अर्थ प्रकट न करके विशेष अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे—पंकज, हिमालय आदि।

2. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✗)

3.

देशज	**विदेशी**	**देशज**	**विदेशी**
पगड़ी	पेंसिल	लुटिया	चाय
लुटिया	कोट		प्याला
झुग्गी	कैंची		टिकिट
डिबिया	चाकू		कमीज
	जमीन		चीनी

4.

तत्सम	**तद्भव**	**तत्सम**	**तद्भव**
अंश	जीभ	सत्य	सीख
काष्ठ	दुबला	रात	
छिद्र	नाच	क्षीर	
दंत	धीरज		

5.

भाई		आग	
गधा		हाथ	
सूत		कलह	
इकट्ठा		मक्खी	
आधा		दस	

6. छात्र स्वयं करें।

❑

8. संज्ञा (Noun)

❑ अभ्यास

1. (क) किसी वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम को **संज्ञा** कहा जाता है; जैसे— कुर्सी, गाय, राजीव, अमृतसर, उदारता आदि।

(ख) संज्ञा के मुख्यतया पाँच भेद हैं—

(i) व्यक्तिवाचक, (ii) जातिवाचक, (iii) भाववाचक, (iv) समूहवाचक, (v) दृव्यवाचक।

उदाहरण

व्यक्तिवाचक संज्ञा	—	हिमालय भारत का गौरव है।
जातिवाचक संज्ञा	—	मछली जल की रानी है।
भाववाचक संज्ञा	—	आम में मिठास है।
समूहवाचक संज्ञा	—	सभा में बहुत भीड़ थी।
दृव्यवाचक संज्ञा	—	सोने की कीमतें बढ़ रही हैं।

(ग) जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु का बोध हो, उसे **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—
हवामहल जयपुर में है।
जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी या स्थान की पूरी जाति या समूह का बोध हो, उन्हें **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—
बाग में फूल खिले हैं।

2. (क) (✓) (ख) (✗) (ग) (✗) (घ) (✓) (ङ) (✓)
(च) (✗) (छ) (✗) (ज) (✓) (झ) (✗) (ञ) (✓)

3.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**	**भाववाचक संज्ञा**
अक्षय कुमार	बच्चा	लड़कपन
जयपुर	मित्र	बालकपन
गीता	सिंह	
हिमालय	दानव	
	शिशु	
	नारी	

4.

ममता	कायरता
अहंकार	शीतलता
सफेदी	पूजा
बचाव	भूल
सुधार	जलन
जीत	हँसाई

5.

संज्ञा शब्द	**भेद**
चीता	जातिवाचक संज्ञा
ईमानदारी	भाववाचक संज्ञा
पुस्तकें	व्यक्तिवाचक संज्ञा
हरियाली	भाववाचक संज्ञा
स्वास्थ्य	भाववाचक संज्ञा
लाल बहादुर शास्त्री	व्यक्तिवाचक संज्ञा
प्रियंका	व्यक्तिवाचक संज्ञा

6. सिंह दानव मेज कुर्सी शिशु
बूढ़ा चोर

7. छात्र स्वयं करें।
8. छात्र स्वयं करें।
9. छात्र स्वयं करें।

❑

9. लिंग (Gender)

❒ अभ्यास

1. (क) लिंग का अर्थ है पहचान। शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का उसे **लिंग** कहते हैं।

   (ख) हिन्दी में लिंग दो प्रकार के होते हैं—**पुल्लिग** एवं **स्त्रीलिंग**

   जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें **पुल्लिग** कहते हैं; जैसे—अध्यापक, भाई, हाथी, शेर, कछुआ, नाग, मोर आदि।

   जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें **स्त्रीलिंग** कहते हैं; जैसे—गाय, माँ, चिड़िया, टोली, पंचायत, सरकार, फौज, कोयल, मछली आदि।

2. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓) (ङ) (✓)
   (च) (✓) (छ) (✓)

3. | | |
   |---|---|
   | पुल्लिग | स्त्रीलिंग |
   | पुल्लिग | पुल्लिग |
   | पुल्लिग | स्त्रीलिंग |
   | पुल्लिग | स्त्रीलिंग |
   | पुल्लिग | पुल्लिग |

4. | | |
   |---|---|
   | कछुआ | खरगोश |
   | कोयल | मक्खी |

5. | | |
   |---|---|
   | बंदरिया | शेरनी |
   | पंडिताइन | गाय |
   | साम्राज्ञी | क्षत्राणी |
   | कवयित्री | मादा मगरमच्छ |
   | गायिका | बुद्धिमती |

6. (क) दादी जी ने अपने पोते को आशीर्वाद दिया।
   (ख) शिक्षक छात्रों को इतिहास पढ़ा रहे हैं।
   (ग) मेरे पिता विद्वान हैं।
   (घ) रानी ने विद्वानों का सम्मान किया।
   (ङ) मम्मी रोज व्यायाम करती हैं।
   (च) शेर ने हिरन का पीछा किया।

7. (क) परीक्षा समाप्त होने पर उसने चैन <u>की</u> साँस ली।
   (ख) उसकी हाथ <u>की</u> हड्डी टूट गई।
   (ग) शिखा बहुत <u>धीमी</u> आवाज में बोलती है।
   (घ) क्षिप्रा <u>की</u> बहन बहुत बुद्धिमान है।
   (ङ) रमन की लिखावट बहुत <u>अच्छी</u> है।

8. छात्र स्वयं करें। ❑

10. वचन (Number)

❐ अभ्यास

1. (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अधिक होने का बोध हो, उसे **वचन** कहा जाता है।

   (ख) वचन के दो भेद हैं—(i) एकवचन (ii) बहुवचन

   (i) **एकवचन**—जिस शब्द से किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी या स्थान के एक होने का बोध होता है, उसे **एकवचन** कहते हैं; जैसे—लड़का, संतरा, कपड़ा, घड़ी, सुराही, बल्ला आदि।

   (ii) **बहुवचन**—जिस शब्द से किसी वस्तु, व्यक्ति, प्राणी या स्थान के एक से अधिक होने का बोध हो, उसे **बहुवचन** कहते हैं; जैसे—लड़के, संतरे, कपड़े, घड़ियाँ, सुराहियाँ, बल्ले आदि।

   (ग) आकाश, पृथ्वी, दूध, घी, आग।

2. (क) घोड़े घास खा रहे हैं।

   (ख) सड़कों की सफाई हो रही है।

   (ग) बिल्ली और कुत्ता आपस में लड़ रहे हैं।

   (घ) गायें रम्भा रही हैं।

   (ङ) लड़के खेलने जा रहे हैं।

   (च) आपके बेटे क्या करते हैं?

3.

बहुवचन	**बहुवचन**
झूले	बहनें
कुटियाँ	साधुओं
तिथियाँ	श्रोताओं
नीतियाँ	कपड़े

4. पिता एक सज्जन व्यक्ति थे।
   डाकू ने आत्मसमर्पण कर दिया।
   कक्षा में उपस्थिति कम है।
   कमरा अच्छी तरह सजा है।
   आपके हस्ताक्षर इस दस्तावेज पर चाहिए।

5. (क) एकवचन (ख) एकवचन (ग) बहुवचन (घ) बहुवचन
   (ङ) एकवचन (च) बहुवचन (छ) एकवचन (ज) बहुवचन

6. (क) मेज पर पुस्तकें रखी हैं।

   (ख) पुलिस को देखकर अभि के होश उड़ गये।

   (ग) विद्यालय में बहुत-सी शिक्षिकाएँ हैं।

(घ) उसकी आँखों से आँसू निकल गये।
(ङ) रितिका ने अपना मुँह धोया।
(च) हम सुबह घूमने जाते हैं।

❑

11. कारक (Case)

❑ अभ्यास

1. (क) संज्ञा एवं सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से जाना जाता है, उसे **कारक** कहा जाता है।

(ख) कारक के आठ भेद हैं—

कारक	**परसर्ग/विभक्ति**
(i) कर्ता	ने
(ii) कर्म	को
(iii) करण	से, के द्वारा
(iv) संप्रदान	को, के लिए
(v) अपादान	से (अलग होना)
(vi) संबंध	का, की, के, रा, री, रे
(vii) अधिकरण	में, पे, पर
(viii) संबोधन	ए, हे, हो, अरे

(ग) **करण कारक**—करण का अर्थ है साधन। संज्ञा या सर्वनाम के जिस साधन द्वारा क्रिया सम्पन्न होती है, वही करण कारक होता है। करण कारक की विभक्ति से एवं द्वारा होती है; जैसे—

(i) उसने लाठी से कुत्ते को मारा।
(ii) रितिका ने फूलों से रंगोली बनाई।
(iii) दरजी ने कपड़े से थैला बनाया।

दिये वाक्यों में लाठी, फूलों और कपड़े सभी करण कारक हैं। इन सबके साथ 'से' परसर्गों का प्रयोग हुआ है।

अपादान कारक—वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने, निकलने, सीखने या तुलना का भाव प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहा जाता है। अपादान कारक की विभक्ति 'से' है; जैसे—

(i) नल से पानी टपक रहा है।
(ii) अधिकतर नदियाँ पहाड़ों से निकलती हैं।
(iii) उसने संगीत अपनी माँ से सीखा।

उपर्युक्त वाक्यों में नल से, पहाड़ों से, माँ से अपादान कारक हैं।

2. (क) अपादान कारक (ख) करण कारक
(ग) कर्ता कारक (घ) संबंध, अधिकरण कारक
(ङ) कर्ता, कर्म कारक (च) करण कारक
(छ) संबंध कारक (ज) कर्म, करण

3. (क) में, ने (ख) के (ग) में (घ) को (ङ) से

4.

कारक	**परसर्ग**	**कारक**	**परसर्ग**
कर्ता	ने	अपादान	से (अलग होना)
कर्म	को	संबंध	का, की, के, रा, री, रे
करण	से, के द्वारा	अधिकरण	मैं, पै, पर
संप्रदान	को, के लिए	संबोधन	ए, हे, हो, अरे

5. **कारक—भेद**
(क) करण कारक (ख) करण कारक
(ग) अधिकरण, अपादान (घ) करण कारक
(ङ) करण कारक (च) अपादान कारक
(छ) करण कारक

❑

12. सर्वनाम (Pronoun)

❑ अभ्यास

1. (क) जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, वे सर्वनाम कहलाते हैं।
(ख) सर्वनाम के छह भेद हैं—(i) पुरुषवाचक, (ii) संकेतवाचक, (iii) अनिश्चयवाचक, (iv) प्रश्नवाचक, (v) संबंधवाचक, (vi) निजवाचक।
(ग) **निजवाचक सर्वनाम** (स्वयं, अपने आप, खुद, आप)—जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग कर्त्ता आप (निज) के लिए करता है, उसे **निजवाचक सर्वनाम** कहते हैं जैसे—
(i) हमारी टीम जीत गई।
(ii) मैं हर काम खुद करता हूँ।
(iii) लक्ष्मी ने स्वयं आकर मुझसे बात की।
(घ) **निश्चयवाचक सर्वनाम** (यह, वह, ये, वे)—जो सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थान की ओर संकेत करें, वे **निश्चयवाचक सर्वनाम** कहलाते हैं। इन्हें संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं; जैसे—
(i) ये मेरी साइकिल है।
(ii) वह मेरा घर है।
(iii) इस संदूक में क्या है?

इन वाक्यों में ये, वो, इस सर्वनाम शब्द एक निश्चित साइकिल, घर तथा संदूक की ओर संकेत कर रहे हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कोई, कुछ, किसी, किन्हीं, कहीं) जो सर्वनाम शब्द किसी अनिश्चित वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थान के लिए प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—

(i) दरवाजे पर कोई खड़ा है।
(ii) अभी किसी ने मुझे आवाज दी।
(iii) आज हम कहीं जाएँगे।

उपरोक्त वाक्यों में कोई, किसी, कुछ और कहीं शब्द **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** हैं, क्योंकि इनसे निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थान का बोध नहीं होता।

2. (क) उसका (ख) उसने (ग) स्वयं (घ) तुम
(ङ) मेरा (च) किसने

3. (क) मुझे, पुरुषवाचक (ख) जिसे, निश्चयवाचक
(ग) किसकी, प्रश्नवाचक (घ) स्वयं, निजवाचक
(ङ) मेरा, निजवाचक (च) उसे, पुरुषवाचक

4. (क) आप यहाँ बैठो।
(ख) इस पहेली का उत्तर मुझे नहीं मालूम।
(ग) तुम्हारा स्कूल कौन-सी जगह पर है।
(घ) मैं आज अपनी पुस्तक लाना भूल गया।
(ङ) हमें आज फिल्म देखने जाना है।

5.

प्रश्नवाचक	**अनिश्चयवाचक**	**निजवाचक**
किसे	कोई	खुद
किसको	कुछ	स्वयं
किधर	किसी	अपने आप

❑

13. विशेषण (Adjective)

❑ अभ्यास

1. (क) संज्ञा एवं सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं।
(ख) **विशेषण** के चार भेद हैं—
(i) गुणवाचक विशेषण (ii) संख्यावाचक विशेषण
(iii) परिमाणवाचक विशेषण (iv) सार्वनामिक विशेषण
(i) **गुणवाचक विशेषण**—जो शब्द किसी संज्ञा एवं सर्वनाम के गुण-दोष, दशा, अवस्था आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

(a) मेरी दीदी सरल स्वभाव की हैं।

(b) काला कौआ काँव-काँव करता है।

(ii) **संख्यावाचक विशेषण**—जो शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम की संख्या सम्बन्धी जानकारी दें, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

टोकरी में पाँच सेब थे। (निश्चित) पेड़ पर कुछ पक्षी हैं। (अनिश्चित)

(iii) **परिमाणवाचक विशेषण**—जो शब्द संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों के परिमाण अर्थात् नाप-तौल तथा मात्रा की जानकारी दें, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। इनके साथ अधिकतर नाप-तौल सूचक शब्द जुड़ा होता है; जैसे—

(a) दो किलो बैंगन (b) चार सेब

(iv) **सार्वनामिक विशेषण**—जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग विशेषण की तरह किया जाता है वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

(a) यह घर मेरा है। (b) मेरा बस्ता नया है।

(ग) संख्यावाचक विशेषण में संख्या प्रमुख होती है—15 आदमी, 10 किमी जबकि परिमाणवाचक में नाप-तैल 4 किलो, 10 लीटर प्रमुख होती है।

2. (क) (✗) (ख) (✓) (ग) (✓) (घ) (✓)
(ङ) (✓)

3. (क) अर्द्धवार्षिक (ख) कंकरीला (ग) वीर (घ) पवित्र-ठण्डा
(ङ) अक्खड़

4.

(क) सफल	गुणवाचक
(ख) होनहार	गुणवाचक
(ग) कुछ टॉफियाँ	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(घ) बारह फुट	परिमाणवाचक विशेषण
(ङ) हजारों किलोमीटर	संख्यावाचक विशेषण

5.

शब्द	**विशेषण**	**शब्द**	**विशेषण**
सुख	सुखी	रंग	रंगीन
फुर्ती	फुर्तीला	शिक्षा	शिक्षित
विदेश	विदेशी	चाचा	चचेरा

6.

उत्तरावस्था	**उत्तमावस्था**	**उत्तरावस्था**	**उत्तमावस्था**
कोमलतर	कोमलतम	लघुतर	लघुत्तम
घनिष्ठतर	घनिष्ठतम	सुंदरतर	सुंदरतम
कुटिलतर	कुटिलतम	विशालतर	विशालतम

7. छात्र स्वयं करें।

❑

14. क्रिया (Verb)

❒ अभ्यास

1. (क) जो शब्द किसी काम करने या होने का बोध कराते हैं, उन्हें **क्रिया** कहते हैं।
प्रत्येक वाक्य में क्रिया का होना जरूरी है। क्रिया प्राय: वाक्य के अन्त में आती है। क्रिया के बिना वाक्य रचना असम्भव है।
क्रिया शब्द विकारी शब्द है जिसमें लिंग, वचन और काल से परिवर्तन आ जाता है।
लिंग के आधार पर लड़का खेल रहा है। लड़की खेल रही है।
वचन के आधार पर लड़का खेल रहा है। लड़के खेल रहे हैं।
काल के आधार पर लड़का खेलता है। लड़का खेलेगा।
धातु—क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। **उदाहरण**—पढ़, खेल, उठ, बैठ, सो आदि। धातु में ना जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनता है। **उदाहरण**—पढ़ना, खेलना, उठना, बैठना आदि।
उपर्युक्त वाक्य में खेल क्रिया सभी वाक्यों में समान है। यही क्रिया का मूल रूप है। लेकिन लिंग, वचन और काल के प्रभाव से उसका रूप बदल जाता है।
क्रिया के भेद
कर्म के आधार पर क्रिया के भेद
अकर्मक क्रिया सकर्मक क्रिया

(ख) **अकर्मक क्रिया**—जिस क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं अर्थात् अकर्मक क्रिया में कर्म की जरूरत नहीं होती। अकर्मक एवं सकर्मक क्रिया को पहचानने हेतु क्रिया से पूर्व क्या और किसको का प्रश्न किया जाता है।
हाथी चिंघाड़ता है। प्रीत रोने लगी।
उपर्युक्त दोनों क्रियाओं के कोई कर्म नहीं हैं। अत: ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।
कुछ अकर्मक क्रियाएँ निम्न हैं—
दौड़ना, भागना, डरना, रोना, जागना, सोना, अकड़ना, उछलना आदि।
सकर्मक क्रिया—जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया का कर्म अनिवार्य है, उसे **सकर्मक क्रिया** कहते हैं।
दर्जी कपड़े सिल रहा है। अंकित पतंग उड़ा रहा है।
उपर्युक्त दोनों वाक्यों में क्रिया सिल रहा है और उड़ा रहा है का फल क्रमश: कपड़े तथा पतंग पर हो रहा है। अत: ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

(ग) **प्रेरणार्थक क्रिया**—जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को कार्य करने को प्रेरित करता है, प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे—
(i) माँ ने बेटी से कॉफी बनवाई। (ii) सेठ ने माली से पौधे लगवाए।

उपरोक्त वाक्यों में चाय बनवाने का काम और पौधे लगवाने का काम कर्ता स्वयं न करके क्रमश: बेटी से करवा रहा है। प्रेरणार्थक क्रियाओं में दो कर्ता होते हैं। उपरोक्त वाक्यों में प्रेरक कर्ता माँ तथा सेठ हैं। प्रेरित कर्ता हैं—बेटी और माली।

2. सठियाना — झुठियाना
   दोहराना — गरमाना
   हथियाना — रंगवाना
3. (क) चढ़ा (ख) जीता (ग) जाना है (घ) डरते (ङ) चरती है
   (च) सोता है (छ) हो रही है
4. (क) लगवाया — प्रेरणार्थक
   (ख) खाई — सकर्मक (सामान्य क्रिया)
   (ग) बतियाने — नामधातु
   (घ) फहराया — नामधातु
   (ङ) सुनकर सो — पूर्वकालिक
5. रजत खाना खाकर बाहर चला गया।
6. (क) बनाता
   (ख) खेल — रहा
   (ग) चला — गया
   (घ) बना — रही
   (ङ) उठ — रही
   (च) जा — रहा
7. छात्र स्वयं करें।

❑

15. काल (Tense)

❑ अभ्यास

1. (क) क्रिया के जिस रूप से उसके सम्पन्न होने के समय का पता चले, उसे **काल** कहते हैं।
   काल के तीन भेद होते हैं—वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यत् काल
   (ख) **वर्तमान काल**—क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि क्रिया अभी सम्पन्न हो रही है, उसे **वर्तमान काल** कहते हैं। वर्तमान काल की क्रिया में सामान्यत: है, हूँ, हैं क्रिया के अन्त में लगे होते हैं। उदाहरण—
   (i) कशिश चित्र बना रही है। (ii) किसान हल चला रहा है।
   (iii) सूरज चमक रहा है। (iv) मम्मी बर्तन साफ कर रही है।

वर्तमान काल के तीन भेद हैं—

(i) **सामान्य वर्तमान**—क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान काल में होने का बोध हो, उसे कहते हैं; जैसे—गरिमा ढोलक बजाती है।

(ii) **अपूर्ण वर्तमान**—जो क्रिया अभी चल रही है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं; जैसे—अभिनव पत्र लिख रहा है।

(iii) **संदिग्ध वर्तमान**—जिस क्रिया के चल रहे समय में पूरा होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमान कहा जाता है; जैसे—पिताजी जा रहे होंगे।

(ग) क्रिया के जिस रूप से ज्ञात हो कि क्रिया सम्पन्न हो चुकी है, उसे **भूतकाल** कहते हैं; जैसे—

(i) मैं स्कूल गया था। (ii) मैंने खाना खाया।

उपरोक्त वाक्यों में क्रिया गया था तथा खाया बताते हैं कि क्रिया सम्पन्न हो चुकी है।

(घ) **भविष्यत् काल**—क्रिया के जिस रूप से उसके आने वाले समय में सम्पन्न होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। भविष्यत् काल की क्रिया के अन्त में गा, गी, गी लगे होते हैं; जैसे—

(i) हम लाल किला देखने जाएँगे। (ii) पूनम गाना गाएगी।

भविष्यत् काल के दो भेद हैं—

(i) **सामान्य भविष्यत्**—जिस क्रिया के उसके आने वाले समय में होने या करने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं; जैसे—कामना चित्र बनाएगी।

(ii) **संभाव्य भविष्यत्**—जिस क्रिया का उसके आने वाले समय में पूरा होने में संदेह हो, उसे संभाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—शायद कल वर्षा हो।

2. (क) आसन्न भूतकाल (ख) पूर्ण भूतकाल (ग) सामान्य भूतकाल
(घ) संभाव्य भविष्यत् (ङ) संदिग्ध भूतकाल

3.

क्रिया	**वर्तमान काल**	**भूतकाल**	**भविष्यत् काल**
लिख	लिखता	लिखा	लिखेगा
खेल	खेलता	खेला	खेलेगा
तैर	तैरता	तैरा	तैरेगा
उठा	उठता	उठा	उठेगा
नहा	नहाता	नहाया	नहायेगा
बना	बनाता	बनाया	बनायेगा

4.

क्रियापद	**काल**
(क) व्यायाम	वर्तमान
(ख) छुट्टी	भविष्यत
(ग) सोती	वर्तमान

(घ) खरीदकर — भूतकाल
(ङ) वर्षा — भविष्यत्
(च) पढ़ — वर्तमान

5. (क) हम लोग जयपुर घूमने जाएँगे।
(ख) रिया गाना गा रही थी।
(ग) नित्या कुछ सब्जियाँ खरीद रही हैं।
(घ) बाग में सुंदर फूल खिलेंगे।
(ङ) आप कहाँ जा रहे थे?

6. छात्र स्वयं करें।

❑

16. अव्यय (Indeclinable Words)

❑ अभ्यास

1. (क) जो शब्द क्रिया के बारे में विशेष जानकारी देते हैं कि क्रिया 'कैसे', 'कब', 'कहाँ' और 'कितनी हुई', उन्हें **क्रियाविशेषण** कहते हैं।
क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं—
(i) रीतिवाचक (ii) स्थानवाचक (iii) कालवाचक (iv) परिमाणवाचक

(ख) जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जोड़ते हैं, वे **संबंधबोधक** अव्यय कहलाते हैं।

(ग) कुछ अव्यय शब्दों का प्रयोग **संबंधबोधक** एवं **क्रियाविशेषण** दोनों की तरह किया जाता है। इनकी पहचान हेतु ध्यान रखना चाहिए कि जब इसका प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के साथ हुआ है तो ये **संबंधबोधक अव्यय** हैं। यदि ये क्रिया के विषय में जानकारी दे रहे हैं तो ये **क्रियाविशेषण** हैं।

जैसे—**संबंधबोधक**	**क्रियाविशेषण**
सड़क के सामने ट्रक खड़ा है।	सामने देखो
कमरे के अंदर कौन है?	अंदर आ जाइए।

(घ) जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, वे **समुच्चयबोधक अव्यय** कहलाते हैं।
प्रतिदिन खेलो ताकि स्वस्थ रहो। बादल छाए मगर वर्षा नहीं हुई।

(ङ) जो अव्यय शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, क्रोध, घृणा, विस्मय, दुख आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं, उन्हें **विस्मयादिबोधक** कहते हैं।

2. (क) क्रियाविशेषण (ख) कालवाचक (ग) पाँच (घ) चार

3. (क) अचानक (ख) ध्यानपूर्वक (ग) चुपचाप (घ) तुरंत
(ङ) धीरे-धीरे

4. (क) आज — कालवाचक क्रियाविशेषण
(ख) ध्यानपूर्वक — रीतिवाचक क्रियाविशेषण
(ग) बाप रे — विस्मयादिबोधक
(घ) ताकि — समुच्चयबोधक
(ङ) की ओर — संबंधबोधक

5. (क) लेकिन (ख) कि (ग) इसलिए (घ) क्योंकि

6. (क) हाय! (ख) शाबाश! (ग) चुप! (घ) वाह!

❑

17. वाक्य-विचार (Syntax)

❑ अभ्यास

1. (क) शब्दों के सार्थक समूह को **वाक्य** कहते हैं; जैसे—(i) अमन पढ़ रहा है। (ii) साक्षी गाना गा रही है।
इन वाक्यों में प्रयुक्त सभी शब्द सार्थक हैं और पूर्ण रूप से अर्थ को स्पष्ट कर रहे हैं।
वाक्य के दो अंग होते हैं—(i) उद्देश्य (ii) विधेय

(ख) **उद्देश्य**—वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे **उद्देश्य** कहते हैं; जैसे—
नित्या गाना गा रही है। दिल्ली भारत की राजधानी है।
उपरोक्त वाक्यों में नित्या और दिल्ली उद्देश्य हैं।
उद्देश्य के बारे में जो कहा जाता है, उसे **विधेय** कहते हैं।
जैसे—विनय साइकिल चला रहा है। किसान खेत में ट्रैक्टर चला रहा है।
इन वाक्यों में साइकिल चला रहा है तथा खेत में ट्रैक्टर चला रहा है विधेय हैं।

(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं—
(i) विधानवाचक (ii) निषेधवाचक (iii) प्रश्नवाचक (iv) आज्ञावाचक
(v) संदेहवाचक (vi) इच्छावाचक (vii) विस्मयादिबोधक
(viii) संकेतवाचक

2. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) मिश्रित वाक्य
(घ) विस्मयादिबोधक वाक्य
(ङ) प्रश्नवाचक वाक्य

3. **उद्देश्य** — **विधेय**

(क) घड़ी	लगातार टिकटिक करती रहती है।
(ख) वीर हनुमान	ने सोने की लंका जला दी।
(ग) मैंने	पुस्तक मेले से पाँच पुस्तकें खरीदी।
(घ) मुख्यमन्त्री	बाढ़ग्रस्त इलाकों का दौरा कर रहे हैं।
(ङ) वर्ष 2010	में कॉमनवेल्थ खेल दिल्ली में हुए।

4. (क) अंकुश मेरी बात सुनता है।
   (ख) स्कूल के अंदर मत जाओ।
   (ग) क्या वह जयपुर जाएगा?
   (घ) शाबाश! तुम छा गए।
   (ङ) क्या सबने सुभाषचंद्र बोस का नाम सुना है?
5. छात्र स्वयं करें।

❑

18. विराम-चिह्न (Punctuation Marks)

❑ अभ्यास

1. (क) लिखित भाषा में भावों को स्पष्ट करने और रुकने की प्रक्रिया को स्पष्ट करने हेतु जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं।

   (ख) **पूर्ण विराम (।)**—वाक्य जहाँ समाप्त होता है, वहाँ पूर्णविराम लगाया जाता है; जैसे—

   (i) मुझे राजमा और पराठे खाने का शौक है।

   (ii) आज तेज बारिश हो रही है।

   अल्पविराम (,)—अल्पविराम अर्थात् थोड़ी देर रुकना।

   किसी एक वाक्य को पढ़ने या बोलते समय थोड़ी देर रुकने हेतु और एक ही प्रकार के पदों या उपवाक्यों को अलग करने के लिए अल्पविराम लगाया जाता है; जैसे—

   वंशिका, रति, अमिता और नव्या सहेलियाँ हैं।

   संबोधन के बाद अल्पविराम लगाया जाता है; जैसे—

   बच्चों, कल हम सिनेमा जाएँगे।

   हाँ या नहीं के पश्चात् अल्पविराम लगता है; जैसे—

   हाँ, मैं कल बरेली जाऊँगा।

   नहीं, तुम इधर आ जाओ।

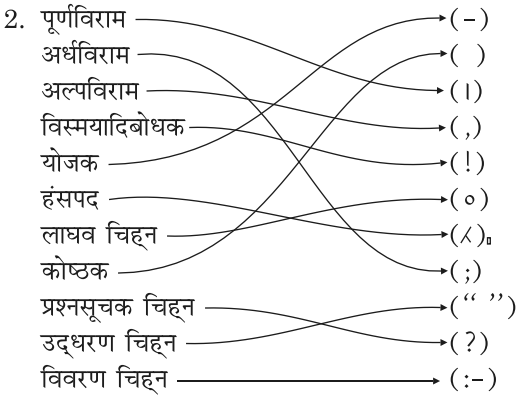

2. पूर्णविराम	(-)
अर्धविराम	( )
अल्पविराम	(।)
विस्मयादिबोधक	(,)
योजक	(!)
हंसपद	(०)
लाघव चिह्न	(‸)।
कोष्ठक	(;)
प्रश्नसूचक चिह्न	(" ")
उद्धरण चिह्न	(?)
विवरण चिह्न	(:-)

3. (क) हमें सभी त्योहार होली, दीवाली, ईद, क्रिसमस मिलकर मनाने चाहिए।
   (ख) माँ ने बेटे को पुकारा, ''अर्जुन बेटा उठो स्कूल को देर हो रही है।''
   (ग) तुम शोर क्यों मचा रहे हो?
   (घ) कृपया पृष्ठ उलटिए का संक्षिप्त रूप है कृ०पृ०उ०।
   (ङ) छि! ये तुमने क्या कर दिया।
   (च) 'सूरसागर', सूरदास की सबसे लोकप्रिय रचना है।
4. कोष्ठक चिह्न
   योजक चिह्न
   विस्मयादिबोधक
5. छात्र स्वयं करें।
6. छात्र स्वयं करें। ❑

19. पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

❒ अभ्यास

1. (क) झंडा, भारत का <u>झंडा</u> तिरंगा है।
   (ख) अश्व, राणा प्रताप के <u>अश्व</u> का नाम चेतक था।
   (ग) कमल, <u>कमल</u> कीचड़ में खिलता है।
   (घ) उन्नति, हर व्यक्ति <u>उन्नति</u> करना चाहता है।
   (ङ) विषधर, <u>विषधर</u> के काटने का इलाज अस्पताल में होता है।
   (च) नृप, <u>नृप</u> प्रजा को संतान की तरह समझता है।
2. भागीरथ रसाल क्षीर विहग मयंक
   नाग ताल विपिन

❑

20. विलोम शब्द (Antonyms)

❐ **अभ्यास**

1.

शब्द	**विलोम**
आस्तिक	नास्तिक
दुर्जन	विनीत
महात्मा	दुरात्मा
लोक	परलोक

2.

विलोम	**विलोम**
प्रदान	सबल
विक्रय	दानव
विकीर्ण	वियोग
पक्षधर	विस्तार
योगी	सुगंध

3.

अपकार	सरल	प्रतिकूल	स्मरण	अंत
सार्थक	सज्जन	वियोग		

❑

21. समान उच्चारण वाले शब्द (Same Pronounce Word (Homonyms)

❐ **अभ्यास**

1.

तालाब	बदनामी
बाण	लोहा
निश्चित	बकरी
इरादा	जो जीता न जा सके
सागर	धूप
कमल	ठंडा
दैत्य	लहर
चाँद	अश्व

2. उदार — उधार खाने वाला
   सर — सिर
   अविज्ञ — जानकार

आदी — बर्बाद
चिर — धूर्त
मूल — मुश्किल
नाई — लोहे के कारीगर
इति — शुभारम्भ

❑

22. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
(One Word Substitution)

❐ अभ्यास

1. (क) समाचारवाचक (ख) अनुगृहीत (ग) वैयाकरण
   (घ) अवध्य (ङ) सार्वजनिक (च) दावानल
   (छ) जिज्ञासु (ज) नागरिक
2. (क) जिसका आकार हो
   (ख) जो सहनशील हो
   (ग) ईश्वर को न मानने वाला
   (घ) जानने का इच्छुक
   (ङ) जिसकी तुलना न की जा सके
   (च) जिसका कोई अर्थ हो
   (छ) जो उपकार को मानता हो
3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i)

❑

23. वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ
(Mistakes related to Spellings)

❐ अभ्यास

1.

शुद्ध वर्तनी	शुद्ध वर्तनी
सम्मुख	शिरोमणि
अंजलि	विरहिणी
उषा	श्रेष्ठ

संगृहीत	गरिष्ठ
नीरोग	अभ्युदय
ऋतु	कृपालु

2. (क) अशोक एक महान सम्राट था।
   (ख) वह निरन्तर अपने काम में लगा रहता है।
   (ग) राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना चाहिए।
   (घ) महादेवी वर्मा हिन्दी की एक प्रसिद्ध कवयित्री हैं।
   (ङ) नीरोग काया एक वरदान की तरह है।
   (च) उसका भविष्य उज्ज्वल है।
   (छ) सोते वक्त दाँत साफ करने चाहिए।
   (ज) बेरोजगारी से उसकी हालत शोचनीय हो गयी।
   (झ) मंत्रीजी ने दीप प्रज्वलित किया।
3. छात्र स्वयं करें।

❑

24. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ (Idioms of Proverbs)

❑ अभ्यास

1. (क) **मुहावरे** के प्रयोग से भाषा में सरसता, रोचकता, प्रवाह और सौन्दर्य आता है अतएव भाषा प्रभावशाली हो जाती है। **मुहावरे** ऐसे वाक्यांश हैं जो साधारण अर्थ न देकर विशेष अर्थ देते हैं।

   (ख) मुहावरों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
   मुहावरे सदैव वाक्यांश के रूप में प्रयोग किये जाते हैं।
   मुहावरे का शाब्दिक अर्थ न लिखकर उसका सांकेतिक अथवा लाक्षणिक अर्थ लिखा जाता है।
   इसकी क्रियाएँ लिंग, वचन, कारक आदि वाक्य के अनुसार बदल जाती हैं।

   (ग) **मुहावरे** तथा **लोकोक्ति** में निम्नलिखित अन्तर हैं—
   मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ दोनों ही भाषा को सरस और प्रभावशाली बनाते हैं परन्तु दोनों में अन्तर होता है।
   मुहावरे वाक्य का अंश होते हैं। मुहावरे का रूप लिंग, वचन और काल के अनुसार बदल जाता है; जबकि लोकोक्तियों का रूप परिवर्तित नहीं होता। मुहावरे स्वतन्त्र वाक्य कभी नहीं बन पाते लेकिन **लोकोक्तियों** का अधिकांश प्रयोग स्वतन्त्र वाक्य के रूप में होता है।

2. (क) लक्ष्मीबाई की वीरता देखकर अंग्रेजों ने **दाँतों तले उँगली दबा ली**।
   (ख) अर्जुन अपने माता-पिता के लिए **अंधे की लकड़ी** थे।
   (ग) चोर दिन-दहाड़े चोरी करके भाग गये और किसी को **कानों कान खबर नहीं हुई**।
   (घ) राजमा चावल देखकर तो **मेरे मुँह में पानी आ जाता है**।
   (ङ) इस विकट परेशानी का हल ढूँढ़ने के लिए हमें **अक्ल के घोड़े दौड़ाने चाहिए**।
3. आँख दिखाना
   आस्तीन का साँप
   दाँत खट्टे करना
   आग बबूला होना
   अक्ल बड़ी या भैंस
   मुँह में राम बगल में छुरी
4. (क) जब उसके कर्मों का पता चला तो वह **नौ दो ग्यारह** हो गया।
   (ख) उसे कोई कितना भी समझा ले पर उसके कान पर **जूँ नहीं रेंगती**।
   (ग) नकल करते हुए रंगे हाथ पकड़े जाने पर सुनील **पानी-पानी हो गया**।
   (घ) चार घंटे लगातार काम करते-करते मेरा **अंग-अंग ढीला** हो गया।
   (ङ) शिक्षिका कक्षा से बाहर निकली और बच्चों ने **आसमान सिर पर उठा लिया**।
5. (क) सरदार पटेल नाराज होते समय **अंगार उगलते थे**।
   (ख) गोलू से कोई समझदारी की उम्मीद न रखना, वह तो पूरा **अक्ल का दुश्मन है**।
   (ग) विरोधी को **गुड़ देकर मारना** आज फैशन है।
   (घ) निर्मल की बात न करो तो अच्छा है वह तो बस **हवाई किले बनाता** है।
6. (क) दोष अपना पर दूसरे को धमकाना
   (ख) बोलने वाले ठोस काम नहीं करते
   (ग) दोस्ती और दुश्मनी एक ओर से नहीं होती
   (घ) दूसरे के भरोसे रहना सर्वथा अनिश्चित रहता है
   (ङ) हिसाब-किताब साफ रखना

❑

25. अलंकार (Figures of Speech)

❑ अभ्यास

1. (क) **अलंकार** दो शब्दों से मिलकर बना होता है—अलम + कार।
   यहाँ पर अलम का अर्थ होता है आभूषण। मानव की सौन्दर्यपासना की प्रवृत्ति से ही अलंकार का जन्म हुआ। जिस तरह से एक नारी अपनी सुन्दरता को

बढ़ाने के लिए आभूषणों का प्रयोग करती है उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग किया जाता है।

अलंकार के तीन भेद होते हैं—(i) शब्दालंकार, (ii) अर्थालंकार, (iii) उभयालंकार।

(ख) यमक शब्द का अर्थ होता है—दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग-अलग आये वहाँ पर **यमक अलंकार** होता है।

जैसे— कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय
वा खाये बौरात नर, या पाये बौराय।

(ग) जहाँ पर कोई एक शब्द एक ही बार आये पर उसके अर्थ अलग-अलग निकले वहाँ पर **श्लेष अलंकार** होता है।

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून
पानी गए न उबरै मोती मानष चून।

(घ) जब उपमेय में उपमान के होने का भ्रम हो जाये वहाँ पर **भ्रान्तिमान अलंकार** होता है जहाँ उपमान और उपमेय दोनों को एक साथ देखने पर उपमान का निश्चयात्मक भ्रम हो जाये मतलब जहाँ एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाए वहाँ **भ्रान्तिमान अलंकार** होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी अंग माना जाता है।

(ङ) **उपमा अलंकार**—उपमा शब्द का अर्थ होता है—तुलना। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु से तुलना की जाए वहाँ पर **उपमा अलंकार** होता है। जैसे—

सागर-सा गंभीर हृदय हो,
गिरी सा ऊँचा हो जिसका मन।

2. (क) रूपक अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार (ग) संदेह अलंकार
(घ) अतिश्योक्ति अलंकार
(ङ) नेत्र के समान कमल है
(च) मानवीकरण अलंकार

❑

26. संवाद लेखन (Dialogue Writing)

❑ अभ्यास

1. (क) **दो मित्रों के मध्य परीक्षा तैयारी के विषय पर संवाद**

अद्‌भुत — कहो, अभिनव वार्षिक परीक्षा की तैयारी कैसी चल रही है?
अभिनव — अच्छी तैयारी चल रही है।
अद्‌भुत — मुझे गणित में परेशानी हो रही है।

अभिनव — जो प्रश्न तुम्हें न आये मुझसे पूछ सकते हो।
अद्‌भुत — ठीक है। मुझे अपनी गणित की कॉपी भी दे देना।
अभिनव — मुझे अंग्रेजी में थोड़ी दिक्कत है क्या तुम मुझे अपनी कॉपी दे सकते हो?
अद्‌भुत — हाँ, मैं तुम्हें गाइड भी कर सकता हूँ।
अभिनव — ठीक है, धन्यवाद।

(ख) **पिता और पुत्र के मध्य पर्यावरण सुरक्षा विषय पर संवाद**

पिता — सार्थक, तुमने इतनी तेज आवाज में टी०वी० क्यों चलाया हुआ है?
सार्थक — पापा, मैं नहा रहा हूँ इसलिए यहाँ तक उसकी आवाज सुन पा रहा हूँ।
पिता — बेटा, यह ध्वनि प्रदूषण का कारण बनता है जिससे दूसरों को परेशानी होती है। हमारी पर्यावरण सुरक्षा पर कुप्रभाव पड़ता है।
सार्थक — पर्यावरण प्रदूषण कितने प्रकार का होता है।
पिता — इसमें जल, मृदा (मिट्‌टी) और वायु प्रदूषण शामिल हैं।
सार्थक — पर्यावरण सुरक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिए।
पिता — हमें, जल मिट्‌टी और वायु को प्रदूषण से बचाना चाहिए।
सार्थक — जल प्रदूषण को कैसे कम कर सकते हैं?
पिता — हमें, गंदा जल नाली, नालों के माध्यम से नदियों में नहीं फेंकना चाहिए।
सार्थक — वायु प्रदूषण कैसे कम कर सकते हैं?
पिता — हमें उद्योगों से निकलने वाले धुएँ और यातायात से फैलने वाले प्रदूषण को प्रौद्योगिकी से कम करना चाहिए।

❑

27. डायरी-लेखन (Diary Writing)

❑ अभ्यास

(क) डायरी एक ऐसी विद्या है, जिसमें व्यक्ति अपने प्रत्येक दिन के अनुभव को लिखता है। इसे रोजनामचा, दैनिकी या दैनंदिनी भी कहते हैं। डायरी-लेखन में व्यक्ति अपने जीवन में घटित होने वाली प्रतिदिन की घटनाओं, अनुभवों, भावों और विचारों को लिखता है।

(ख) डायरी लिखना हमारे लिए रोजाना की गतिविधियों और अनुभवों को लिखना है जिससे हमें अतीत के अनुभवों से शिक्षा मिले और हम अपने अतीत की मीठी-कड़वी यादों को ताजा रख सके। ❑

28. सूचना-लेखन
(Dialogue Writing)

❒ **अभ्यास**

(क) विद्या ग्लोबल स्कूल,
बागपत रोड, मेरठ
2 नवम्बर, 20_____

वार्षिक समारोह में भाग लेने हेतु सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय में वार्षिक समारोह 4 दिसम्बर, 20_____ को आयोजित किया जाएगा। इसमें गायन, नृत्य, सामूहिक और एकल कार्यक्रमों में भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी 4 नवम्बर, 20___ तक अपना नाम सांस्कृतिक समिति के पास लिखवा दें।

नम्रता जैन
सचिव, सांस्कृतिक समिति

(ख) विद्या ग्लोबल स्कूल
बागपत रोड, मेरठ
2 सितम्बर, 20___

पुस्तक खोने की सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि मेरी हिन्दी की पुस्तक 1 सितम्बर, 20___ को विद्यालय में कहीं खो गई है। जिस विद्यार्थी को यह मिले उसे खोया-पाया विभाग में जमा करा दें।

आपका साथी
रितिक

❑

29. चित्र-वर्णन
(Picture Description)

❒ **अभ्यास**

(i) **वर्णन**—आज, 2 अक्टूबर ___ को गाँधी जयन्ती है। इसलिए स्कूल में गाँधी जयन्ती का आयोजन किया गया है। इसमें छात्र देश के राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं जिन्होंने अपने अदम्य साहस और अहिंसा के दम पर भारत को स्वतन्त्रता दिलायी।

(ii) आज 15 अगस्त है। आज के ही दिन 15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतन्त्र हुआ था। इसलिए शिक्षक, शिक्षिकाएँ एवं छात्र स्वतन्त्रता दिवस मना रहे हैं। वे राष्ट्रगान गाकर झंडे को सैल्यूट (अभिवादन) कर रहे हैं।

❑

30. विज्ञापन-लेखन (Advertising Making)

❑ अभ्यास

(क) कोमल मजबूत लम्बे बाल
हमेशा लगाए शैम्पू वॉल

(ख) काले घने और लम्बे बालों की आस
जब पर्ल तेल हो आपके पास

(ग) **आवश्यकता है घर में काम करने वाली आया की**
घर मे झाड़ू, पोंछा और बर्तन साफ करने के लिए एक आया की आवश्यकता है। इच्छुक महिलाएँ नीचे दिए पते पर सम्पर्क करें।
विपुल शर्मा, 1272
शास्त्रीनगर, मेरठ।

(घ) शरीर में रहे फुर्ती
साबुन लगाएँ तंदुरुस्ती

(ङ) **विक्रय हेतु प्लाट**
150 गज का प्लाट शास्त्रीनगर सैक्टर-3 में विक्रय हेतु उपलब्ध है, जो मेन रोड से बहुत नजदीक है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें।
ए०बी० सिंह, पंचशील कॉलोनी
147/5 मेरठ।

(च) हीरो मोटरसाइकिल मॉडल 2023 अच्छी हालत में विक्रय हेतु उपलब्ध है। सम्पर्क करें
डी०के० श्रीवास्तव
1722 ब्रह्मपुरी, मेरठ।

❑

31. पत्र-लेखन (Letter-Writing)

❒ अभ्यास

1. छात्र स्वयं करें।
2. (क) श्रीमती प्रधानाचार्य महोदया
विद्या ग्लोबल स्कूल
बागपत रोड, मेरठ
8.8.20___

विषय : अनुभाग बदलवाने हेतु प्रार्थना-पत्र

महोदया,

सविनय निवेदन है, कि मैं सातवी 'बी' का छात्र हूँ। मैं अपना अनुभाग बदलकर सातवीं 'ए' करना चाहता हूँ। मेरे कई मित्रों ने भी अपना अनुभाग बदला है अत: आपसे अनुरोध है कि मेरा अनुभाग बदलकर मुझे कृतार्थ करें।

आपका आज्ञाकारी
हर्षित

प्रतिष्ठा में,
सम्पादक 'दैनिक जागरण'
मेरठ।
7.8.20___

विषय : क्षेत्र में जलभराव की समस्या

महोदय,

मैं ब्रह्मपुरी मेरठ का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र में वर्षा के कारण जलभराव की समस्या हो गई है। जिससे नालियों का गंदा पानी घरों में भी भर रहा है। इसी गंदे पानी में से होकर सभी को अपने कार्यों हेतु जाना पड़ रहा है। जलभराव से बीमारियों का खतरा भी मँडरा रहा है। अत: आपसे अनुरोध है कि अपने प्रतिष्ठित पत्र में मेरे पत्र को शामिल करें जिससे महानगर निगम के अधिकारी अवगत हो सकें। आपकी अति कृपा होगी।

आपका अमन
1360, ब्रह्मपुरी, मेरठ

❑

32. अनुच्छेद-लेखन
(Paragraph Writing)

❒ **अभ्यास**

(क) **यदि मैं प्रधानमंत्री होता/होती**—यदि मैं देश का प्रधानमन्त्री होता तो सभी योजनाओं को आम आदमी के हित में तैयार कराना प्रथम कर्तव्य होता। देश की आर्थिक नीति की सर्वोच्च प्राथमिकता रोजगार उपलब्ध कराना होती। समाज की अन्तिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति हेतु राशन, घर, रोजगार और स्वास्थ्य का समुचित प्रबन्ध करता। कल्याणकारी कार्यक्रमों के माध्यम से गरीबों को शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराता जिससे वे अपना सर्वांगीण विकास कर सकते। मेरा लक्ष्य सभी को समान अवसर उपलब्ध कराना होता जिससे समाज में भाईचारा कायम होता।

(ख) छात्र स्वयं करें।

(ग) **मोबाइल** ने देश में एक नई स्फूर्ति और जागृति उत्पन्न की है। यह शिक्षा, सूचना और मनोरंजन का अनुपम साधन बनकर उभरा है। स्मार्ट मोबाइल के माध्यम से आम-जन में विश्वास और जागृति उत्पन्न हुई है। इसके माध्यम से वह अनेक सरकारी योजनाओं का लाभ उठा रहा है। छात्र अनेक प्रकार की मुफ्त शिक्षा या कम पैसों में ऑनलाइन कोचिंग सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। दूसरी ओर इससे अनेक हानियाँ भी देखी जा रही हैं। छात्र और अन्य जन इसके आदी होते जा रहे हैं। जिसका प्रतिकूल असर पढ़ाई और सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ा है। वही, यह स्वास्थ्य विशेषकर आँखों के लिए काफी नुकसानदायक साबित हो रहा है।

(घ) **सच्चा मित्र**—सच्चा मित्र वही है जो आपको आइना दिखाता रहे अर्थात् आपकी कमियों और खूबियों से परिचित कराता रहे। वह सदैव अच्छे-बुरे वक्त में आपका साथ देता है। आप उन्नति करें और एक अच्छे नागरिक बने यही उसका ध्येय होता है। वह हर प्रकार से आपकी सहायता करता है। वह आपकी जीत को अपनी जीत समझकर प्रसन्न होता है। आपको विपरीत परिस्थितियों में भी निराश नहीं होने देता है। आपकी सफलता में उसका बहुमूल्य योगदान रहता है।

❑

33. कहानी लेखन
(Story Writing)

❒ **अभ्यास**

(क) **ईमानदारी**

अशोक एक मिनी मैट्रो चालक था। वह रोजाना की तरह यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर छोड़ रहा था। तभी वहाँ एक स्त्री आयी और उसने स्टेट बैंक बागपत

रोड चलने के लिए कहा। अशोक ने अपनी मिनी मैट्रो उसी ओर दौड़ा दी। वह स्त्री किसी सम्पन्न परिवार की लग रही थी उसके हाथ में एक बैग था। उसने वह बैग अपने बराबर में सीट पर रख दिया और पूछा ''कितनी देर लगेगी स्टेट बैंक पहुँचने में।'' ''मैम साहब दस मिनट लगेंगे।'' अशोक ने उत्तर दिया। स्टेट बैंक आ गया। महिला जल्दी से उतर गई और तेजी से बैंक के अंदर चली गई। वह अपना बैग मिनी मैट्रो में भूल गई। जब अशोक की निगाह पड़ी तो उसने सोचा मैम साहब जल्दी वापस आ रही होंगी इसलिए वह रुक गया। स्त्री ने जब देखा कि वह बैग मिनी मैट्रो में भूल गयी इसलिए वह तेजी से बाहर आयी, देखा तो उसकी साँस में साँस आयी क्योंकि अशोक वहीं खड़ा था। बैग भी वहीं था। उसने खोलकर देखा तो उसमें ज्यों-के-त्यों रुपये थे। उसकी ईमानदारी देख उस स्त्री ने अशोक को पाँच हजार रुपये देने चाहे, लेकिन उसने इनकार कर दिया और अपने 30 रुपये माँगे। यह सुनकर स्त्री बहुत प्रसन्न हुई और उसने अशोक को धन्यवाद दिया।

(ख) **सच्चाई**

शादी के लिए लड़का देखने आये जगमोहन शर्मा ने लड़के से पूछा, 'बेटा, कितने समय से टीचर हो', 'जी एक वर्ष हो गया।' मनु ने कहा। ''क्या तनख्वाह मिलती है'', शर्मा जी ने पूछा, सकुचाते हुए मनु ने कहा, ''जी, अभी तो 10,000 रुपये मिलते हैं।'' जी०एस० पब्लिक स्कूल तो नामी अंग्रेजी माध्यम का स्कूल है वहाँ इतनी कम तनख्वाह, ये तो अन्याय है। महँगाई के समय में इतने पैसे में कैसे गुजारा हो पायेगा?'' जी ''मैं अंग्रेजी के ट्यूशन भी पढ़ाता हूँ जिससे पाँच हजार रुपये मिल जाते हैं।'' ''क्या तुम सरकारी नौकरी के लिए भी कोशिश कर रहे हो?'' ''जी, हाँ, लेकिन कई बार प्रयास करने पर भी कोई परिणाम नहीं निकला।'' मनु ने कहा। ''हिम्मत नहीं हारते लगे रहो।'' ''क्या तुम मेरी बेटी को नौकरी करने दोगे?'' जी, नहीं, क्यों? ''ये मेरे सिद्धान्तों के खिलाफ है, मेरे परिवार की जिम्मेदारी मेरे कंधों पर है, उसका दायित्व परिवार को सँभालना होगा।'' मनु ने विश्वास से कहा। शर्मा जी को लड़के की सच्चाई ने बहुत प्रभावित किया और उन्होंने उसकी सच्चाई को देखते हुए रिश्ते के लिए हाँ कर दी क्योंकि उन्होंने पहले ही लड़के की सैलरी स्कूल में पता कर ली थी।

❑

34. अपठित बोध (गद्यांश एवं पद्यांश)
[Unseen Passages (Prose and Poetry)]

❐ अभ्यास

1. (क) आज व्यक्ति धन की अंधी दौड़ में शामिल है।
   (ख) धन की अंधी-दौड़ के कारण मानवीय सम्बन्धों में कटुता बढ़ी है।
   (ग) धन की लालसा के कारण हत्या, लूट, अपहरण, चोरी-डकैती जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं।

(घ) धन की दौड़ में लोग मिलावट, महँगाई और कालाबाजारी में शामिल हैं।
(ङ) 'धन की अंधी दौड़'

2. (क) सोनजुही की बेल नवेली है।
(ख) सोनजुही की बेल आँगन के बाड़े पर चढ़ गई।
(ग) सोनजुही की बेल एक वर्ष में खिल जाती है।
(घ) सोनजुही की बेल दारू खंभ से लिपट गई।
(ङ) सोनजुही की बेल

❑

35. निबंध-लेखन (Essay Writing)

❑ अभ्यास

(क) उत्साह में सफलता, भावनाओं का प्रवाह, प्राइवेट सैक्टर में अहम, प्रतियोगी परीक्षा में महत्ती उपसंहार।

जीवन में उत्साह से किया गया कार्य ही सफल होता है। बिना उत्साह के किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती। यदि हमारे अंदर स्कूल जाने का उत्साह नहीं है तो हम समय पर नहीं पहुँच सकते। यदि हममें अपने अध्ययन के प्रति उत्साह नहीं तो हम अच्छे अंक कैसे ला सकते हैं? एक खिलाड़ी उत्साह से प्रयास करता है। सफलता के उत्साह में वह नाचता-गाता है। जैसे भारत ने 29 जून, 2024 को टी-20 विश्व कप जीता। यह टीम के उत्साह का ही परिणाम था। उसके बाद टीम के कई खिलाड़ी नाचते देखे गये।

यदि हम प्राइवेट सैक्टर में कार्य करते हैं तो तभी उन्नति कर पाते हैं जब हम अपना कार्य उत्साह से करते हैं। उत्साह से किये कार्य से वह संस्था उन्नति करती है और हमें भी उन्नति मिलती है। यदि बिना उत्साह के हम प्राइवेट सैक्टर में कार्य करते हैं और समय के पाबंद नहीं, गुणवत्ता से कार्य नहीं करते हैं तो हम उस संस्था में ज्यादा नहीं टिक पाते हैं।

इसी प्रकार यदि प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करते हैं और हमारे अंदर उत्साह की कमी है तो हम सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

उत्साह में हम कष्टों को भूल जाते हैं। उत्साहपूर्वक कार्य करने में जो असफलता भी हाथ लगती है, देर-सबेर सफलता में बदल जाती है। इसका उदाहरण चन्द्रयान-3 की सफलता है जो पहले असफल रहा था।

उत्साही व्यक्ति शरीर और मन से स्वस्थ रहता है। वह अपने निर्णय स्वयं लेता है। अपनी असफलताओं से हतोत्साहित नहीं होता।

अत: हमें प्रत्येक कार्य उत्साह से करना चाहिए जिससे हम अपने जीवन में सफल हो सके।

(ख) **विनम्रता की आवश्यकता**—विनम्रता से सफलता, विनम्रता के उदाहरण, सामाजिक एवं पारिवारिक रिश्ते, एक नेता के लिए आवश्यक, साक्षात्कार में अच्छे अंक, उपसंहार।

जीवन में विनम्रता की महती आवश्यकता है। यदि व्यक्ति विनम्र है तो प्रत्येक व्यक्ति उसे आदर एवं सम्मान देता है और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। विनम्रता का उदाहरण प्रधानमन्त्री लाल-बहादुर शास्त्री हैं जो अपनी विनम्रता के कारण सभी के प्रिय थे और प्रधानमन्त्री बन सके। वर्तमान प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी अपनी विनम्रता के लिए विश्वविख्यात हैं। यही कारण है कि लोग उनके भक्त बन जाते हैं। उन्होंने सफाईकर्मियों के पैर धोये थे। वे मजदूर वर्ग के लोगों से भी आत्मीयता और विनम्रता से पेश आते हैं।

अपनी विनम्रता के कारण ही वे लगातार तीसरी बार प्रधानमन्त्री बने हैं। विनम्रता के कारण ही वे विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता हैं।

विनम्रता से हमारे सामाजिक सम्बन्ध ही अच्छे नहीं रहते वरन् हमारे पारिवारिक रिश्ते भी मजबूत रहते हैं। एक परिवार तभी अपनी पुत्री को किसी अनजान व्यक्ति को विवाह हेतु सौंपने के लिए तैयार होता है जब वह विनम्र है।

विनम्र व्यक्ति अपनी सफलता पर इतराता नहीं है। जैसे समुद्र में बाढ़ नहीं आती उसी प्रकार उसके व्यवहार में अन्तर नहीं आता है। वह आम और खास सभी से विनम्रता से पेश आता है।

एक नेता का विशेष गुण है कि वह अपनी विनम्रता से अपने संगठन और पार्टी को मजबूती प्रदान करे।

अपने दम पर संगठन बामसेफ (BAMCEF) और पार्टी बसपा खड़ी करने वाले माननीय कांशीराम इसके उदाहरण हैं। अरविन्द केजरीवाल ने भी अपनी विनम्रता से 'आप' को एक राष्ट्रीय पार्टी बना दिया। ममता बनर्जी ने टीएमसी (TMC) को अपने दम पर एक राष्ट्रीय पार्टी बना दिया।

यदि किसी व्यक्ति को आप पर क्रोध आ रहा है और आप विनम्र हैं तो वह आप पर ज्यादा क्रोधित नहीं होगा। सेवा हो या व्यापार आपको हर जगह अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त होगी यदि आप विनम्र हैं। एक कम्पनी का मालिक अपने कर्मचारी में विनम्रता देखना चाहता है। सरकारी कर्मचारी चाहे वह क्लर्क हो या आई०ए०एस० की परीक्षा साक्षात्कार में एक विनम्र अभ्यर्थी के अच्छे अंक आते हैं।

अत: जीवन में विनम्रता होनी आवश्यक है जिससे हम सुख से जी सकें और समाज को भी सुखी बना सकें।

❑